*Shodh Sangam Patrika*
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 1 | (Jan – Mar 2026)

# बज्जिका लोकगीतों की परम्परा और प्रभाव

**सुरभि रानी [1], प्रो. स्वस्ति वर्मा [2]**
[1] शोधार्थी, स्नातकोत्तर संगीत विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
[2] अध्यक्ष, स्नातकोत्तर संगीत विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

**सारांश**

संगीत आनंद का अविर्भाव है। संगीत से अध्यात्म प्रकाशित होता है। संगीत ईश्वर का स्वरूप है। मानव ने संगीत प्रकृति से सीखा है। सृष्टि के कण-कण में अलौकिक संगीत व्याप्त है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि सृष्टि का जन्म ही नाद के कारण हुआ। सृष्टि को 'नादेन जायते' कहा गया है। पंडित शारंगदेव ने अपने ग्रंथ संगीत रत्नाकर में नाद का वर्णन करते हुए लिखा है- "ब्रह्मा नाद रूपो स्मृतः।" अर्थात इन्होंने परमपिता ब्रह्मा को नाद के रूप में स्वीकार किया है। नाद की गणना संगीत के आधारभूत तत्त्वों में की जाती है और सारा जगत को नाद के ही अधीन माना गया है। विद्वानों के अनुसार संगीत के द्वारा मनुष्य प्राचीन काल से ही मनोरंजन की प्राप्ति करता आ रहा है। प्राचीन काल में संगीत मनोरंजन के साथ-साथ मुक्ति प्राप्त करने का भी एक प्रमुख साधन था। सामान्यतः मुक्ति-प्राप्ति के उद्देश्य से जिस संगीत का गायन किया जाता था, उसे मार्गी संगीत के नाम से जाना जाता है और मनोरंजन के उद्देश्य से जिस संगीत का प्रयोग किया जाता था, उसे लौकिक संगीत के नाम से संबोधित किया गया है। लौकिक संगीत के अंतर्गत गाए जाने वाले गीत ही आगे चलकर लोकगीतों के नाम से प्रचलित हुए, जिनका गायन आज के समय में साधारण या सामान्य लोगों के द्वारा किया जाता है। इन लोकगीतों के अंतर्गत भिन्न-भिन्न प्रदेशों एवं क्षेत्रों में नाना प्रकार के लोकगीतों का गायन किया जाता है। इन लोकगीतों का एक प्रचलित एवं प्रसिद्ध प्रकार है बज्जिका लोकगीत, जिसका वर्णन इस शोध-पत्र में मैं भली-भांति करने का प्रयास कर रही हूँ।

**मुख्य शब्दः** बज्जिका, लोकगीत, गायन, सांस्कृतिक, परम्परा।

**मूल आलेखः**

उत्तरी बिहार के चंपारण से लेकर पूर्णिया जिले तक पहले विदेह या तिरहुत कहलाने वाला प्राचीन राज्य था। ईसा-पूर्व छठी सदी में विश्व के प्रथम गणतंत्र के रूप में यहाँ वैशाली गणराज्य की स्थापना हुई। प्राचीन भारतवर्ष के शक्तिशाली वैशाली महाजनपद में बज्जिसंघ द्वारा प्रयोग की जाने वाली बज्जिका एक अति प्राचीन बोली-भाषा है। प्राचीन मिथिला का केन्द्र जनकपुर (वर्तमान में नेपाल का हिस्सा) बज्जिका भाषी क्षेत्र के अंतर्गत आता था। यहाँ आज भी बज्जिका ही बोली जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि बज्जिका वास्तव में मैथिली का प्राचीन स्वरूप है, जिसकी नींव पर मध्यकाल के राज्याश्रयी विद्वान कवियों ने आधुनिक मानक मैथिली का निर्माण किया।[1]

सम्पूर्ण भारतवर्ष में गीतों के गायन एवं सुनने की एक सुन्दर परम्परा है। लोगों का ऐसा मानना है कि यह परम्परा वैदिक काल से ही चली आ रही है, परन्तु इसका कोई निश्चित उल्लेख या प्रमाण नहीं मिलता है, जिसके अभाव में गीतों का विवेचन वैदिक मूल में ही करना पड़ता है। वैदिक काल में लोकगीतों के लिए 'गाथा' शब्द का प्रयोग किया जाता था, जिसका सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। उस समय लोकगायकों को 'गाथिन' कहा जाता था। प्राचीन काल में राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ आदि अवसरों पर भी गाथा-गीतों का आयोजन किया जाता था। उसी परम्परा का विकसित रूप आधुनिक काल में भी देखने को मिलता है। ऐसे कहें तो बिहार का प्रत्येक क्षेत्र संगीत की सुरभि है, किन्तु सम्पूर्ण प्रदेश की सांस्कृतिक गतिविधियों का हृदय-स्थल बज्जिका क्षेत्र संगीत की साधना, समाहार और आविष्कार की विशिष्ट भूमि मानी गई है। ब्रजभूमि

की तरह बज्जिका में भी साहित्य और संगीत का अजस्त्र स्रोत रहा है। यहाँ की अमराइयों में, खेत-खलिहानों में, डगर-राहों में संगीत की धारा प्रवाहित होती रहती है। चाहे घर में शिशुओं का जन्म हुआ हो अथवा विवाह का मांगलिक अवसर हो, चाहे फसलों का बोना, निराना अथवा काटना, चक्की चलाना आदि घर-गृहस्थी के क्रिया-कलाप हों, चाहे देव-पूजन की शुभ वेला हो, पर्व-त्योहार व उत्सवों की घड़ी हो— सभी संगीत के द्वारा ही शोभित होते हैं। यहाँ लोकगीतों, लोक-धुनों व शैलियों की इतनी प्रचुर सम्पदा है कि श्रोता ठगा-सा रह जाता है।[2] यहाँ लोकगीतों की कई प्रकार की धुनें प्रचलित हैं, जिसके कारण श्रोता अपने आप में निर्णय नहीं कर पाता है कि किसे सुने और किसे छोड़े। महेशवाणी, नचारी, लगनी, समदाउन, बटगमनी, कोहबर, जतसार, झूमर, पूर्वी आदि अनेक लोकगीतों की धुन मनुष्य के भावों को आंदोलित करती है।

बज्जिका की माटी-पानी में लोकगीतों की विपुल सम्पदा पड़ी हुई है। बज्जिका के लोकगीतों की विविधता उसकी भाषा एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं के कारण है। सम्पूर्ण बिहार में कई प्रकार की भाषाओं का प्रयोग किया जाता है, जिसमें मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका तथा बज्जिका आदि प्रचलित हैं। इन बोलियों में विविधता अधिक है तथा समानता कम। मैथिली का क्षेत्र सामान्यतः दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, पूर्णिया, सहरसा आदि है।[3] बिहार में भोजपुरी का क्षेत्र आरा, बक्सर, छपरा या सारण आदि है। बिहार का पटना, गया, हजारीबाग, जहानाबाद, औरंगाबाद आदि मगही क्षेत्र है। बज्जिका, मैथिली तथा भोजपुरी दोनों के मिश्रण से निर्मित बोली है, जिसके अंतर्गत मुजफ्फरपुर, वैशाली तथा चंपारण का पूर्वी भाग आता है।

लोक साहित्य में लोकगीतों का प्रमुख स्थान है। जनजीवन में इनका व्यापक प्रचार है। ये गीत भावुक और संवेदनशील जनता के हृदय के स्वाभाविक उद्गार होते हैं। बिहार में भोजपुरी, मिथिला, बज्जिका, मगही, अंगिका जैसी लोक-भाषाओं में लोकगीत बिहार को हमेशा आनंदित एवं ऊर्जा प्रदान करते रहे हैं। बज्जिका बज्जी जनपद की भाषा है। डॉ. ग्रियर्सन ने इस क्षेत्र की बोली को पश्चिमी मैथिली या मैथिली-भोजपुरी कहा है। पंडित राहुल सांकृत्यायन आदि विद्वानों ने बृज्जियों की बोली समझकर इसका नाम बृज्जिका दिया है, लेकिन इस भाषा के लिए बज्जिका अधिक उपयुक्त है। यह भाषा-बोली या इनके लोकगीत मैथिली से सर्वथा भिन्न हैं। मैथिली भाषा, सभ्यता और संस्कृति का क्षेत्र पूर्व विदेह रहा है और इस क्षेत्र की अपनी लिपि भी पूर्व विदेह लिपि रही है। बज्जी जनपद की भाषा, सभ्यता और संस्कृति में पूर्व विदेह क्षेत्र से प्रारंभ से ही भिन्नता रही है। बज्जिका भाषा की अपनी सीमा है- पश्चिम में गंडक नदी से लेकर पूरब में कोसी और हानंद नदी तक तथा उत्तर में नेपाल के पहाड़ से लेकर दक्षिण में गंगा नदी तक बज्जिका-भाषी मौजूद हैं। भाषा के अंतर्गत बज्जिका सम्पूर्ण मुजफ्फरपुर, वैशाली, समस्तीपुर, दरभंगा, सीतामढ़ी आदि जगहों पर बोली जाती है। बज्जिका का क्षेत्र करीब चौवालीस सौ वर्ग मील में फैला है। इस भाषा को बोलने वालों की संख्या करीब बासठ लाख है। बज्जिका भाषा का लोकगीत काफी चर्चित है। विवाह-गीत बज्जिका भाषा में काफी लोकप्रिय हैं।

लोकगीत चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, लेकिन लोकगीत को समझने के लिए लोकगीत के इतिहास की जानकारी होना अति आवश्यक है, जिसके संबंध में कई विद्वानों ने अपने-अपने मत दिए हैं। इस संबंध में विद्वानों का मत है कि लोकगीत का जन्म जनमानस से हुआ है और लोकमानस का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मनुष्य का, क्योंकि संगीत की उत्पत्ति मनुष्य की उत्पत्ति के समय ही मानी जाती है। प्राचीन समय में मनुष्य अधिकतर जंगली अवस्था में रहा करता था और उस समय उसकी जीविका का मुख्य साधन शिकार करना था। यह शिकार करना उसके लिए एक मनोरंजन का साधन भी था। उस समय वे अपने मनोरंजन के क्रम में कभी-कभी भयानक जानवरों के शिकार के बाद पूरे परिवार सहित खुशी से झूम उठते थे और वे अपनी भाषा में हु-हु, हे-हे आदि विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का उच्चारण करके आनंदित होते थे। यही उस समय उनका संगीत था, जिसकी तुलना लोकसंगीत से की जा सकती है। इस प्रकार लोकसंगीत का जन्म या इतिहास भी लोक के जन्म के साथ ही माना जा सकता है, जो बाद में आम जनता की संपत्ति बन गई।

कई संगीत विद्वानों ने प्राकृतिक संगीत को ही लोकसंगीत माना है। जब भाषा का विकास पूर्ण रूप से नहीं हुआ था, तब व्यक्ति अपने विचारों को प्रकट करने के लिए कुछ स्पष्ट शब्दों का उच्चारण किया करता था; उस समय वही वाणी उसकी

भावना की अभिव्यक्ति एवं संगीत कहलाती थी। धीरे-धीरे समाज के साथ संगीत का भी विकास हुआ। तब संगीत के सामूहिक गीत एवं नृत्यों के महत्व को पहचाना गया, जिसका परिणाम यह हुआ कि उसने परम्परा की भाव-भंगिमा और उद्गारों की गहराई का अनुभव करते हुए आपसी प्रेम, सद्भावना, संगठन और प्रत्येक अर्थ में अपनत्व की भावना के महत्व को पहचाना तथा अपने जीवन में उसे प्राथमिकता प्रदान कर सभ्यता की एक नई धारा की ओर स्वयं को अग्रसारित किया। यही संगीत लोकसंगीत के नाम से विकसित हुआ, जिसे राष्ट्रीयता की भावना का जन्मदाता भी माना जाता है।

लोक संस्कृति, जिसे हम लक्षणों से तो जान सकते हैं, किन्तु उसे परिभाषा में समेटना मुश्किल है, क्योंकि उसका क्षेत्र विस्तृत है। कुछ अंगों में संस्कृति सभ्यता से भिन्न है; अर्थात हम कह सकते हैं कि सभ्यता हमारे पास है, जो मूर्त रूप है, लेकिन संस्कृति उसमें व्याप्त गुण है, जिसे महसूस किया जा सकता है। जैसे महल, सड़क, मोटर, पोशाक और अच्छा भोजन- ये सब सभ्यता हैं, मगर पोशाक पहनने और भोजन करने की जो कला है, वह हमारी संस्कृति है। जहाँ तक मुजफ्फरपुर की लोक संस्कृति की बात की जाए, तो इसमें भाषाई समन्वय दृष्टिगोचर होता है, क्योंकि तमाम बिहारवासी इसे स्वीकार करते हैं कि मुजफ्फरपुर बिहार की सांस्कृतिक राजधानी है। यहाँ की संस्कृति इतनी परिपक्व और विकसित है कि इसमें कतिपय अन्य संस्कृतियों के समन्वय का रूप हमें देखने को मिलता है। यदि हम प्राचीन मुजफ्फरपुर की लोक संस्कृति पर दृष्टि डालें, तो महावीर, बुद्ध, माँ जानकी से इसका संबंध तथा उसकी विकसित लोक संस्कृति की स्पष्ट झलक हमें यहाँ के समाज में दृष्टिगोचर होती है। माँ जानकी की जन्मभूमि पूर्व मुजफ्फरपुर और वर्तमान सीतामढ़ी का पुनौरा गाँव है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ माँ जानकी का जन्म हुआ और पालन-पोषण जनक जी ने किया। उनकी शादी की चर्चा सर्वव्याप्त है, किन्तु लोक संस्कृति में ऐसा कहा जाता है कि जानकी जी की जब विदाई हुई, तो मुजफ्फरपुर एवं मिथिला की संस्कृति के अनुरूप उन्हें खोइछा दी गई। जनकपुर से अयोध्या जाने के क्रम में खोइछा के धान में से कुछ धान उन्होंने नैहर की सम्पन्नता के लिए रास्ते-रास्ते छिटक दिए। आज भी यहाँ के लोग कहते हैं कि माँ सीता का आशीर्वाद है, जिसके कारण सीतामढ़ी, रक्सौल, मोतिहारी, सुगौली, बेतिया से नरकटियागंज तक विभिन्न प्रकार के सुगंधित धान की पैदावार होती है।

बज्जिका की प्राचीनता एवं गरिमा वैशाली गणतंत्र के साथ जुड़ी हुई है, साथ ही यह ऐतिहासिक स्थल के रूप में जानी जाती है और महावीर की जन्मस्थली तथा भगवान बुद्ध की कर्मभूमि के रूप में भी विख्यात है। लगभग 500 ई.पू. भारत में स्थापित वैशाली गणराज्य (महाजनपद) का राज्य-संचालन करने वाले अष्टकुलों— लिच्छवी, वृज्जी (वज्जि), ज्ञात्रिक, विदेह, उगरा, भोग, इक्ष्वाकु और कौरव— में सबसे प्रधान कुलों बज्जिकुल एवं लिच्छवी द्वारा प्रयोग की जाने वाली बोली बज्जिका कहलाने लगी।[5] राजकाज के लिए उस समय संभवतः प्राकृत का इस्तेमाल होता था, जबकि धार्मिक कृत्य संस्कृत में होते थे। बज्जिका के शब्दों का विस्तार इन दोनों स्रोतों से हुआ है। आजकल इसमें उर्दू तथा अंग्रेज़ी के शब्दों का प्रयोग बढ़ गया है।[6] यह हिन्द-ईरानी शाखा की हिन्द-आर्य उपशाखा के बिहारी भाषा-समूह के अंतर्गत वर्गीकृत है।

रूप, सौन्दर्य, नृत्य और गायन में भी मुजफ्फरपुर की लोक संस्कृति अपना अक्षुण्ण स्थान रखती है। मुजफ्फरपुर का वर्तमान अम्बारा चौक राजनर्तकी आम्रपाली की जन्मभूमि है। जातक कथा में यह वर्णित है कि वैशाली नगरी की एक प्रसिद्ध नृत्यांगना को बुद्ध ने सारे नियमों को परे कर बौद्ध धर्म में दीक्षित करने की अनुमति प्रदान की। यह हमारे मुजफ्फरपुर की सांस्कृतिक धरोहर थी।

अतः मुजफ्फरपुर ने अत्यन्त प्राचीन काल से अपनी संस्कृति की छाप छोड़ी है। बुद्ध, महावीर और राम के काल में भी इसका अस्तित्व था और इसकी लोक संस्कृति भी थी, क्योंकि आज भी सीता की शादी और विदाई से संबंधित गीत महिलाएँ गाती हैं, जिनमें यहाँ की लोक संस्कृति की झलक मिलती है।

**निष्कर्ष:**

लोकसंगीत सांस्कृतिक परिचय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो एक सामूहिक सांस्कृतिक विरासत को समझने में मदद करता है। यह विभिन्न आदिवासी समुदायों, जातियों और क्षेत्रों में उपस्थित भिन्नता को समर्थन करता है और स्मृति की बुनियाद बनाता है। लोकसंगीत के माध्यम से सांस्कृतिक परिचय का अद्वितीय स्वरूप मौजूद है, जिसमें स्थानीय रूपरेखा, पूर्वी परंपरा और इसकी सांस्कृतिक उपस्थिति को समझा जा सकता है। लोकसंगीत के गीत और नृत्य विभिन्न संस्कृतियों को इतिहास, धार्मिकता और रोजगार के संबंध में जानकारी प्रदान करते हैं। आज भी यहाँ की महिलाएँ शादी-ब्याह के अवसर पर आम-महुआ के सन्निकट दो पेड़ों में धागा बाँधकर उसकी पूजा करती हैं और शादी के पूर्व की रस्म को अदा करती हैं, जो कि काफी पुरानी लोक संस्कृति है। इसके साथ ही, लोकसंगीत एक सामूहिक एवं सांस्कृतिक व्यापक अध्ययन का भी हिस्सा है। समृद्धि के महत्वपूर्ण प्रमुख कारकों के माध्यम से हम विभिन्न समुदायों की भूमिका, रूढ़िवाद और सांस्कृतिक परंपराएँ समझ सकते हैं। लोकसंगीत का सांस्कृतिक परिचय हमें भारतीय सांस्कृतिक विरासत की अद्वितीयता में ले जाता है और यह स्मृति, भिन्नता और सांस्कृतिक एकता की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

**संदर्भ सूची:**

1. घोष, कुमार मनीष, पुरातत्त्व निबंधावली, पृ. 241
2. बज्जिका दर्पण, संपादक संजय शाह मित्र, पृष्ठ सं. 65
3. घोष, कुमार मनीष, पुरातत्त्व निबंधावली, पृ. 246
4. बज्जिका दर्पण, संपादक संजय शाह मित्र, पृष्ठ सं. 59
5. वहीं, पृष्ठ सं. 56